# DSSSB PRT, TGT & PGT

Part(A+B)

## SCHOLAR BATCH

# हिन्दी

## भक्ति काल

Part -3

LIVE 12-06-2024 09:00 AM

# नाभादास

यह तुलसीदास कालीन राम भक्त कवि थे। संवत् 1657 के लगभग वर्तमान थे। नाभादास अग्रदास के शिष्य थे। इनका प्रसिद्ध ग्रन्थ भक्त माल संवत् 1642 के बाद लिखा गया और प्रियदास जी ने उसकी टीका लिखी। इनकी 'अष्टयाम' की रचना रसिक भावना को लेकर हुई, जिसमें राम की लीलाओं का वर्णन किया गया है।

# ईश्वरदास

ईश्वरदास का जन्म 1480 ई. माना जाता है। इनकी सुप्रसिद्ध कृति 'सत्यवती कथा है। इसका रचना काल 1501 ई. है।

# महाकवि तुलसीदास

तुलसीदास के जन्म सम्बन्ध में अधिकांश विद्वानों में मतभेद है । अन्तः साक्ष्य के आधार पर इनकी जन्मतिथि 1632 ई. अधिक युक्ति संगत प्रतीत होती है । इनका जन्म स्थान राजापुर बताया जाता है । जनश्रुति के आधार पर तुलसीदास जी के पिता का नाम 'आत्माराम दुबे' और माता का नाम 'हुलसी' था। इनका विवाह दीनबन्धु पाठक की कन्या. 'रत्नावली' से हुआ था। माता-पिता के द्वारा छोड़ दिए जाने पर 'बाबा नरहरिदास' ने इनका 'पालन-पोषण' किया और ज्ञान - भक्ति की शिक्षा भी दी। विवाह पश्चात् उन्हें सन्तान प्राप्ति हुई थी । किन्तु अल्पायु में ही उसकी मृत्यु हो गई। पत्नी के प्रति अत्यधिक आसक्त थे । एक बार पत्नी

द्वारा भर्त्सना - " लाज न आई आपको पौरे आएहु साथ' मिली "तब वे दाम्पत्य जीवन से विमुख होकर प्रभु प्रेम की ओर उन्मुख हुए।

उन्होंने कई जगह की तीर्थयात्रा की । अन्तत: काशी में ही अपना स्थायी निवास बनाया। इसी अवस्था में साहित्य सर्जना आरम्भ की। इनके 'गुरु नरहरिदास' माने जाते हैं। इनके गुरु ने ही राम कथा सुनाकर राम भक्ति की ओर प्रवृत्त किया। उनकी मृत्यु अत्यन्त पीड़ादायी अवस्था में हुई ।

तुलसीदास रचित ग्रन्थों की संख्या बारह है, जो प्रामाणिक मानी जाती है । वह क्रमानुसार इस प्रकार हैं- वैराग्य सन्दीपनी, रामाज्ञा, प्रश्न, रामलला नहछू, जानकी मंगल, रामचरितमानस, पार्वती मंगल, कृष्ण गीतावली, गीतावली, विनयपत्रिका, दोहावली, बरवैरामायण और कवितावली आदि ।

**गोस्वामी तुलसीदास की रचनाओं का संक्षिप्त परिचय निम्न है—** वैराग्य सन्दीपनी (1626-1627 ई.) मुक्त, दोहा, सोरठा एवं ब्रजभाषा का प्रयोग कर 'सन्त महिमा का वर्णन किया गया है।

- जानकी मंगल-राम जानकी विवाह का वर्णन है।
- पार्वती मंगल- पार्वती के जन्म और विवाहोत्सव का वर्णन है।
- कृष्ण गीतावली - कृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन एवं गोपियों का विरह वर्णन है।
- विनय पत्रिका- राम के प्रति कवि का विनय भाव अभिव्यक्ति है।
- कवितावली - कवित्त शैली में लिखा गया संग्रह है।
- रामचरितमानस - मर्यादा पुरुषोत्तम राम के चरित्रानुकूल प्रसंगों को विवेचित किया गया है।

'रामचरितमानस' की रचना संवत् 1631 में चैत्र शुक्ल रामनवमी (मंगलवार) को हुई थी। इसकी रचना में कुल 2 वर्ष 7 महीना 26 दिन लगा ।

'रामचरितमानस' में सात काण्ड या सोपान हैं, जो क्रमशः इस प्रकार हैं—

1. बालकाण्ड
2. अयोध्या काण्ड
3. अरण्यकाण्ड
4. किष्किन्धा काण्ड
5. सुन्दरकाण्ड
6. लंका काण्ड
7. उत्तर काण्ड

• अयोध्या काण्ड को रामचरितमानस का हृदय स्थल कहा जाता है । इस काण्ड की चित्रकूट सभा को आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने एक 'आध्यात्मिक' घटना की संज्ञा प्रदान की है।

## 'रामचरितमानस' के मार्मिक स्थल निम्नलिखित हैं-

1. राम का अयोध्या त्याग और पथिक के रूप में वन गमन
2. चित्रकूट में राम और भरत का मिलन
3. शबरी का आतिथ्य
4. लक्ष्मण को शक्ति लगने पर राम का विलाप
5. भरत की प्रतीक्षा आदि।

- तुलसी ने रामचरितमानस की कल्पना 'मानसरोवर' के रूपक के रूप में की है, जिसमें (7) काण्ड के रूप में सात सोपान तथा चार वक्ता के रूप में चार घाट हैं।

काकभुशुण्डि-गरुड़-संवाद

↓

शिव-पार्वती-संवाद
ज्ञानघाट : राजघाट
(प्रथम वक्ता ; श्रोता) →

रामयश जल से परिपूर्ण
रामचरितमानस

← तुलसी-सन्त-संवाद
प्रपतिघाट : गाय घाट

↑

याज्ञवलक्य-भारद्वाज-संवाद
कर्मघाट : पंचायती घाट

## अलंकार - योजना के सम्बन्ध में तुलसी को प्राप्त उपाधियाँ निम्न हैं-

| उपाधि के प्रस्तो | प्राप्त उपाधि |
|---|---|
| लाला भगवानदीन और बच्चन सिंह | रूपकों का बादशाह |
| आचार्य रामचन्द्र शुक्ल | अनुप्रास का बादशाह |
| डॉ. उदयभानु सिंह | उत्प्रेक्षाओं का बादशाह |

- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है "तुलसी का सम्पूर्ण काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है।"
- 'रामचरितमानस' पर 'सर्वाधिक प्रभाव' 'अध्यात्म रामायण' का पड़ा है
- तुलसीदास ने सर्वप्रथम 'मानस' रसखान को सुनाया था।
- 'रामचरितमानस' की प्रथम टीका अयोध्या के बाबा 'रामचरण दास' ने लिखी।

## ‘रामचरितमानस’ के सन्दर्भ में रहीमदास ने लिखा है-

रामचरितमानस विमल, सन्तन जीवन प्रान।
हिन्दुवान को वेद सम, यवनहि प्रकट कुरान ॥

## भिखारी दास ने तुलसीदास के सम्बन्ध में लिखा है

तुलसी गंग दुवौ भए सुकविन के सरदार।
इनके काव्यन में मिली भाषा विविध प्रकार ।।

## कृष्ण काव्य

भक्तिकालीन सगुण भक्ति धारा में कृष्ण भक्ति काव्य में कृष्ण भक्ति को अधिक महत्त्व दिया गया है। 'ऋग्वेद' में कृष्ण भक्ति का उल्लेख श्रोता ऋषि के रूप में हुआ है। छन्दोग्योपनिषद् में कृष्ण का उल्लेख देवकी पुत्र के रूप में हुआ है। महाभारत में कृष्ण का चरित विस्तृत रूप में चित्रित हुआ है।

पुराणों में कृष्ण का जो रूप विकसित हुआ है उसके सन्दर्भ में पाश्चात्य विद्वानों ने कृष्ण की बाल लीलाओं को 'क्राइस्ट' के बाल चरित्र का अनुकरण कहा है। श्रीकृष्ण के पूर्णावतार के सन्दर्भ में पहली बार पुराणों में भी कहा गया है।

भक्तिकाल के 'सगुण' भक्ति काव्यधारा में कृष्ण के प्रमुख प्रवर्तक 'सूरदास जी' हैं। साथ ही कृष्ण भक्ति साहित्य प्राणयन विभिन्न कृष्णोपासक सम्प्रदायों में निम्बार्क, चैतन्य बल्लभ और राधा बल्लभ आदि में किया है। इस धारा के विकास में सूरदास को अलग स्थान प्रदान किया है। इस धारा के विकास में अन्य कृष्ण भक्त कवियों ने भी अपना अमूल्य योगदान दिया है। उनमें प्रमुख हैं- नन्ददास, परमानन्ददास, हितहरिवंश, ध्रुवदास श्रीभट्ट स्वामी, हरिदास, गदाधर भट्ट, मीराबाई, रसखान आदि ।

# सूरदास

सूरदास कृष्ण भक्ति शाखा के प्रमुख कवि हैं। सूरदास जी के जीवन वृत को लेकर विद्वानों में काफी मतभेद है। सूरदास का जन्म 1478 ई. माना जाता है। विभिन्न रचना के आधार पर जन्म 'सीही' नामक गाँव और सारस्वत 'ब्राह्मण' और 'जाट' से उत्पन्न कहा गया है। उनके पिता के रूप में 'अकबर दरबारी' गायक 'रामदास' का उल्लेख किया गया है। 'चौरासी वैष्णव की वार्ता' में सूर के जीवन वृत्त पर प्रकाश डाला गया है।

सूरदास बड़े गायक थे। वे 'गऊघाट' पर निवास करते थे और विनयपद गाते थे। महाप्रभु बल्लभाचार्य ने उन्हें 'पुष्टिमार्ग' में दीक्षित किया और कृष्ण लीला गाने की प्रेरणा दी। उन्होंने कृष्ण लीला के 'सहस्त्रावधि' पद लिखे, जिनकी प्रसिद्धि सुनकर देशाधिपति (अकबर) उनसे मिले। सूरदास अन्धे थे। वे ईश्वर और गुरु में कोई अन्तर नहीं मानते थे।

**उनके देहावसन समय पर विट्ठलनाथ ने शोकार्त होकर कहा था-**

*" पुष्टिमारग को जहाज जात है,*
*सो जाको कछु लेना होय सोले । "*

सूरदास की शिक्षा के सम्बन्ध में उल्लेख नहीं मिलता। वे गाँव से चार कोस दूर रह कर पद रचना में लीन रहते थे और गान - विद्या में प्रवीण थे। सूरदास वल्लभाचार्य के सम्पर्क में आने पर सख्य, वात्सल्य और माधुर्य भाव की पद रचना करने लगे। सूरदास के श्रीमद्भागवत के आधार पर कृष्ण सम्बन्धी रचित पदों की संख्या सवा लाख बताई जाती है तथा इनके द्वारा रचित ग्रन्थों की संख्या 25 बतायी जाती है, जिसमें तीन ही उपलब्ध हैं, जो निम्न हैं-

1. सूरसागर
2. सूरसारावली
3. साहित्य लहरी

- सूरदास की रचनाओं का सर्वप्रथम सम्पादन कलकत्ता में सन् 1841 में 'रागकल्पद्रुम' नाम से हुआ ।
- सूरदास कृत 'सूरसागर का उपजीव्य 'भागवत महापुराण' का दशम् स्कन्ध है तथा सूरसागर में 4936 पद तथा 12 स्कन्ध हैं। भ्रमर गीत का सर्वप्रथम एक पूर्ण प्रसंग के रूप में वर्णन श्रीमद्भागवत के दशम् स्कन्ध के 47वें अध्याय के 12 से 21 श्लोक में मिलता है।

- भ्रमर गीत में कुल 700 पद हैं। 'भ्रमरगीत' को उपालम्भ काव्य भी कहते हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इसे 'ध्वनिकाव्य' कहा है
- सूर सारावली में 1107 छंद हैं। इसकी रचना संसार को होली का रूपक मानकर की गई है।
- साहित्य लहरी (1150 ई.) अलंकार और नायिका भेदों के उदाहरण प्रस्तुत करने वाले 18 'दृष्टिकूट' पद हैं।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है। "सूरदास जब अपने विषय शुरू करते हैं, तो मानो अलंकार शास्त्र हाथ जोड़कर उनके पीछे दौड़ा करता है। उपमाओं की बाढ़ आ जाती है, रूपकों की वर्षा होने लगती है। संगीत के प्रवाह में कवि स्वयं बह जाता है।

## सूरदास का अन्तिम पद निम्नलिखित है-

" खंजननयन रूप रस माते
अति सै चारा चपल अनियारे, पल पिंजरा न समाते ।

सूरदास को 'वात्सल्य रस' का 'सम्राट' माना जाता है।

1. नन्द जू मेरे मन आनन्द भयो, हौ गोवर्द्धन ते आयो ।
है हरि भजन को परमान। नीच पावै ऊँच पढ़वी, वाजते नीसान ||

(2)- शोभित कर नवनीत लिए ।

घुटुरुन चलन रेनु तन मण्डित मुख दधि लेप किए।।
सिखवत चलन जसोदा मैया ||

3. अरबराय कर पानि गहावति, डगमगाय धरै पैयो ।।
पाहुनि करि दै तनक मह्यौ ।

# वल्लभाचार्य

वल्लभाचार्य भक्तिकालीन सगुणधारा की कृष्णभक्ति शाखा के आधार स्तम्भ एवं पुष्टिमार्ग के प्रणेता माने जाते हैं। इनका जन्म 1478 .ई., वैशाख कृष्ण एकादशी' को दक्षिण भारत के कांकरवाड़ ग्राम में तैलंग ब्राह्मण के यहाँ हुआ था। इनके पिता का नाम लक्ष्मण भट्ट तथा पत्नी का नाम 'इल्म्मागांरू' था। इन्हें 'वैश्वानरावतार अग्नि' का अवतार कहा जाता है। ये वेद शास्त्र में पारंगत थे। इन्हें 'श्री रुद्रसम्प्रदाय' के विल्ल्वामंगलाचार्य जी द्वारा इन्हें 'अष्टादशाक्षर' गोपाल मन्त्र' की दीक्षा दी गई। इन्हें त्रिदण्ड संन्यास की दीक्षा स्वामी 'नारायणेन्द्र' तीर्थ से प्राप्त हुई। विवाह पण्डित 'श्रीदेव भट्ट' जी की कन्या 'महालक्ष्मी' से हुआ और इनके दो पुत्र हुए श्रीगोपीनाथ व 'विट्ठलनाथ'

'श्री वल्लभाचार्य ने ब्रजमण्डल में जिस 'कृष्ण भक्ति' को प्रतिष्ठित किया उसका आधार शुद्धाद्वैत है। उन्होंने 'पुष्टिमार्ग' की स्थापना की है तथा पुष्टिमार्ग का अर्थ है- 'भगवद् अनुग्रह' या कृपा ।

## श्री वल्लभाचार्य ने भक्तों के चार भेद किए हैं।

1. प्रवाही पुष्ट भक्त
2. मर्यादा पुष्ट भक्त
3. पुष्टि पुष्ट भक्त
4. शुद्ध पुष्ट भक्त

## वल्लभाचार्य ने निम्नांकित ग्रन्थों की रचना की है-

1. पूर्व मीमांसा भाष्य
2. उत्तर मीमांसा या ब्रह्मसूत्र भाष्य
3. श्रीमदभागवत का सूक्ष्म टीका
4. सुबोधिनी टीका
5. तत्त्वदीप निबन्ध

वल्लभाचार्य ने वल्लभ सम्प्रदाय में 'अष्टयाम' की सेवा का उल्लेख किया है-

1. मंगलाचरण
2. श्रृंगार
3. ग्वाल
4. राजयोग
5. उत्थापन
6. भोग
7. संध्या-आरती
8. शयन

- 1519 ई. में वल्लभाचार्य के शिष्य 'पूरनमल खत्री' ने गोवर्द्धन पर्वत पर श्रीनाथनी का मन्दिर बनवाया जिसका प्रबन्ध दायित्व 'कृष्णदास' पर था।

- गोस्वामी विट्ठलनाथ 1565 ई. में चार 'वल्लभाचार्य' और चार अपने शिष्यों को मिलाकार 'अष्टछाप' की स्थापना की।

- वल्लभाचार्य के कुल 84 तथा विट्ठलनाथ के कुल 252 शिष्य थे।

# अष्टछाप के कवि -

| क्रं. सं. | शिष्य | जन्म | गुरु | जन्म स्थान |
|---|---|---|---|---|
| 1. | कुम्भनदास | 1468-1583 | वल्लभाचार्य | जमुनावतौ (उ.प्र.) |
| 2. | सूरदास | 1478-1583 | वल्लभाचार्य | सीही (उ.प्र.) |
| 3. | परमानन्ददास | 1493 | वल्लभाचार्य | कन्नौज (उ.प्र.) |
| 4. | कृष्ण दास | 1496-1578 | वल्लभाचार्य | चिलोतरा (गुजरात) |
| 5. | गोविन्द स्वामी | 1505-1585 | विट्ठलनाथ | आन्तरी (राजस्थान) |
| 6. | छीतस्वामी | 1515-1585 | विट्ठलनाथ | मथुरा (उ.प्र.) |
| 7. | चतुर्भुज दास | 1530-1585 | विट्ठलनाथ | जमुनावती (उ.प्र.) |
| 8. | नन्ददास | 1533-1583 | विट्ठलनाथ | रामपुर (उ.प्र.) |